इगास बग्वाल महोत्सव

चर्चा में क्यों?

इगास बग्वाल, जिसे **बूढ़ी दिवाली** या **हरबोधनी एकादशी** के नाम से भी जाना जाता है, **दिवाली के 11 दिन बाद उत्तराखंड में मनाया जाने वाला एक पारंपरिक त्यौहार** है। यह त्यौहार राज्य की **सांस्कृतिक विरासत** को दर्शाता है, जो साझा परंपराओं और उत्सवों के माध्यम से समुदायों को एकजुट करता है।

प्रमुख बिंदु

- **उत्पत्ति और महत्त्व:**
  - इगास बग्वाल **कार्तिक शुक्ल एकादशी को मनाई जाती है** और **यह भगवान विष्णु के चार महीने के विश्राम काल के अंत का प्रतीक है**, जो नई शुरुआत के लिये एक शुभ समय है।
  - "इगास" शब्द उत्तराखंड में सांस्कृतिक गौरव और पौराणिक श्रद्धा से जुड़ा है।
  - ऐसा माना जाता है कि जब **भगवान राम के अयोध्या लौटने की सूचना दिवाली के 11 दिन बाद उत्तराखंड पहुँची, तो** स्थानीय लोगों ने अपने तरीके से दिवाली मनाई।
  - एक अन्य किंवदंती **गढ़वाली योद्धा माधव सिंह भंडारी की दापाघाटी में तिब्बत पर विजय का जश्न मनाती है, जिसे** समुदाय द्वारा एकता और वीरता के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है।
- **भैलो- मशाल परंपरा:**
  - **ग्रामीण लोग देवदार की लकड़ियों को बांधकर भैलो या अंधाया** नामक **बड़ी मशालें** बनाते हैं, जिन्हें **जलाकर ऊपर की ओर घुमाया जाता है, जो अंधकार के निष्कासन का प्रतीक है।**
  - ऐसा माना जाता है कि इस मशाल अनुष्ठान से **देवी लक्ष्मी से समृद्धि का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है।**
- **त्यौहार अनुष्ठान और पशु सम्मान:**
  - उत्तराखंड की **कृषि जीवन शैली** के लिये आवश्यक मवेशियों को इगास बग्वाल के दौरान सम्मानित किया जाता है। ग्रामीण उन्हें नहलाते हैं और हल्दी और सरसों के तेल से सजाते हैं।
  - **पशुओं के लिये विशेष भोजन तैयार किया जाता है,** तथा सांप्रदायिक सद्भाव का जश्न मनाने के लिये ग्रामीणों के बीच पारंपरिक व्यंजन बाँटे जाते हैं।
- **इगास बग्वाल के संरक्षण के प्रयास:**
  - स्थानीय प्राधिकारी और सांस्कृतिक संगठन कार्यक्रमों और जागरूकता अभियानों के माध्यम से इगास बग्वाल को बढ़ावा देते हैं, जिसका उद्देश्य **त्योहार की विरासत को संरक्षित करना** है।
  - युवा-केंद्रित पहल इगास बग्वाल के सांस्कृतिक महत्त्व पर ज़ोर देती है, तथा यह सुनिश्चित करती है कि इसकी विरासत भविष्य की पीढ़ियों तक बनी रहे।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/igas-bagwal-festival